

Goddess Bagulamukhi



Bagulamukhi stands in the back side of Shiva. She dress herself in all yellow garments. Her skin is yellowish and very soft and smooth. She is always angry, very resentfully pulls the tongue of the asura by her left hand and ready to strike on the asura's head. By propitiating her, a devotee may make her do things otherwise impossible. She bring fortune to her worshipers. She has limitless powers. She can stop the tide of a river, to make the wind stand still and even fire soothing. She brings fall to the self-conceited. Indra trembles at her sight. It is said that she can achieve anything and whatever God or Goddess can not do for their Bhaktas, can be achieved only by her grace. Her temple at Datia M.P. (India) is a Siddha Peeth where she is worshiped as having four hands.

The word Bagla is derived from the word Valga which became Vagla and then Bagla. The word Valga means bridle or the rein that we put in the mouth to control the movements of tongue and direction. Similarly she is called Peetambara, the one who is associated with yellow color or golden color (which became yellow). In the color scheme the yellow color is mixed to deaden the effect of the brightness of the other colors. For any practice of paralyzing the yellow color is ordained and even in Jnanavna Tantra a Sri Chakra drawn with yellow material and worshipped with yellow flowers is recommended. The Sidhh Vidhya is worshiped with four hands and where she is seated on a golden throne. She is the only MahaVidhya who is given this honor. The other form of her which is called Pret- Asan Dhysaini is with two hands seated on a corps. It is a vivid point that other MahaVidhya's like Kali or Tara has also a corps to sit and Shodashi has Panch Pret aasan to sit.

The worship of this Sidhi Vidhya alongwith other Brahm Vidhya's or Maha Vidhya's is pre ordained and comes to a person from many many past births to take him towards final salvation or Mukti. Datia ke Swamiji has compiled Bagulamukhi Stotra on her, where in he has quoted the Vedic origin of this great mother. The hatha yogis like Gorakshnath and Nombarka was also her devotee and bhajans that used to be sung in the presence of our master Swamiji was supposed to be formulated by Gorakh Panthis.

The tongue has two functions which gives taste and speech. The hatha yogis perform most of their practice with Khechri Mudra. That's why she is of prime importance to all kind of yogas. It is in her kramam only that all the first Maha Vidyas like Kali, Tara and Shodshi are linked. Not only that but even Narayana and Brahma are also there in her Kramam, apart from Ganesha, Vatuk, Rudr Anand Bhairav of Bhairavi and Mrityunjaya. As the Dasa Mahavidyas are divided in two kulas : Kali Kula and Sri Kula. She falls in Sri Kula. The statue at Peetambara Peeth was perceived by Swamiji, though letter on modeled on the statue of Krishna as it exists now at Kedareshor near Agra.

Bagulamukhi is not Danda Natha of Sri Vidhya as some people think. The Danda Natha refers to Varahi who also has yellow hue and has parlaying powers.

She is Also called Brahma Astra Rupini and it appears that she might have been propitiated by Brahma for the grant of the boon of Brahma Astra : the most powerful Astra. Similarly the Peetambara word stuck to her because of the grant of Peetambar to Vishnu, which he always wears on upper limbs of his body. In fact the mythology says that she was propitiated by Narayana in some place in Saurashtra and requested to come to the rescue of three worlds. This adds upto her very importance.

बगलामुखी माँ

बगला संतम्भिनी महाविद्या है जो तीनों लोकों को अपने अपने स्थान पर स्तम्भित किए है। कृत युग में जगत का एक विनाशकारी एक वातक्षोभ उत्पन्न हुआ जिसका भगवान विष्णु ने महात्रिपुरसुन्दरी महाविद्या के प्रयोग से शमन किया था। महात्रिपुरसुन्दरी ही बगला के रूप में प्रकट हुई थीं। त्रैलोक्य स्तम्भिनी ब्रह्मास्त्र महाविद्या ही श्री विद्या एवं वैष्णव तेज से युक्त होकर बगला नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके इस व्यापक स्वरूप के ज्ञान से साधक अविद्या से मुक्त होकर मुक्ति लाभ करता है। इस घोर कलिकाल में भी श्री बगला के प्रयोग प्रत्यक्ष सिद्धप्रद हैं व इसीलिए तंत्र में इन्हें सिद्धविद्या कहा गया है। विशेषतः राज्याभियोग में इनका अप्रतिम प्रभाव देखा गया है। मुमुक्षुगण तो काम, क्रोध, आदि शत्रुओं के कीलन स्तम्भन व विनाश में ही इनका उपयोग करते हैं।

शब्द तत्त्व शिवशक्ति रूप परतत्त्व का प्रकाशक है। इस से ही मंत्रों की उत्पत्ति होती है तथा परा नामक वाणी के रूप में जिस देवता की अभिव्यक्ति होती है उसका अनुभव योगियों द्वारा किया जाता है। परमात्मा की इस परा नामक वाणी का उदगम स्थान मूलाधार है। वाणी का यह रूप सर्वथा सत्य है जिसे पांतजली द्वारा “ऋतंभरा तत्र प्रज्ञा” सूत्र में सूत्रित किया है। यही वाणी परा, पश्यन्ति, मध्यमा तथा वैखरी नाम से चार प्रकार की है। वाणी के यह चार प्रकार ही भगवती बगला के चार हाथ हैं। इन चारों हाथों में धारण किए शस्त्रों का विवरण इस प्रकार है : पहला शस्त्र गदा है। गदा शब्द का अर्थ ही अभिव्यक्ति वाणी यही शस्त्र का रूप है। दूसरा आयुध है वज्र : वाग्वज्र से यजमान की ही हिंसा हो जाती है। तीसरा अस्त्र है पाश : यह पाश देवी का माधुर्य आदि गुण है। इससे महान साधक को भी बन्धन से वश में कर लेती हैं। चौथा आयुध जिह्वा है : यह दुर्वाग रूप है व जिह्वा से ही दुर्वाक्यों का प्रयोग होता है तथा उच्चारण आदि का दोष भी जिह्वा से ही होता है। अतः भगवती बगला के विग्रह अर्थात् मूर्ति में जिह्वा का ग्रहण स्पष्ट दिखाया गया है। जिह्वा के संयम से ही काम पर विजय प्राप्त होती है। वाग् संयम से वाग्मिष्य की प्राप्ति होती है व इस के नियंत्रण से ही सब दोषों का विलय हो जाता है।

पीत वर्ण पृथ्वी का होता है व इससे स्थिरता का ग्रहण होता है। अतः इसे स्थिर माया, स्तब्ध माया या स्थिरामुखी नामों से भी सम्बोधित किया जाता है। पीत वस्त्र आच्छादक होते हैं व इनमें छन्द का भी ग्रहण होता है। देवी के स्वर्ण कुण्डलों से अभिप्राय है भोग व मोक्ष। रत्न गुणित माला का अर्थ है अनेक प्रकार के ऐश्वर्य। मुकुट का अर्थ पारमेष्ठ्य पद से है। षोडशी कला रूप चंद्र मुकुट में स्थित है। देवी के नेत्र त्रय चन्द्र, सूर्य व अग्नि के अभिव्यंजक हैं अथवा जाग्रत, सुषुप्ति, स्वप्न अवस्थाओं को त्रिनेत्र कहा जा सकता है। चौथी तुरीया सर्व साक्षिणी पराम्बा बगला हैं। देवी का अव्याकृत रूप ही आसन है। इसी प्रकार छत्र मणिद्वीप आदि का विवरण है। सिंह वाहन का अर्थ है धर्म। इस प्रकार मन्त्रार्थ को अभिलक्षित कर जो साधक ध्यान करता है उसको सभी फल प्राप्त हो जाते हैं। बगला भगवती का यह रहस्योक्त वास्तविक रूप है व साधकों के लिए देवी के इस रूप का ज्ञान होना आवश्यक है। जो इस रूप में देवी को जानता है वह परमोत्कृष्ट साधक होता है।